[Shri G C. Bhattacharya]

being manufactured by these companies and which contain chemicals which have been found to be cancer-causing. I would also appeal to the Government to encourage the use indigenous herbs for this purpose; those who want to dye their hair can do so with the help of indigenously-available herbs.

REFERENCE TO THE ALLEGED THEFT IN THE DIGAMBER JAIN CHHOTA MANDIR, KUCHA SETH, DELHI

श्री हरी शंकर भाभड़ा (राजस्थान) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार का ध्यान आपके माध्यम से दिल्ली में जो कानून की व्यवस्था बिगड़ रही है उसकी ओर दिलाना चाहता हूं और उसके दो उदाहरण आपने सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं ।

एक पति-पत्नी अपनी जवान लड़की के साथ रात का दूसरा शो देखने के लिये गये ।

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल (मध्य-प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी दूसरा कोई सुन नहीं रहा है। मंत्री जी का ध्यान दूसरी तरफ है ।

श्री हरी शंकर भाभड़ा : जब रात को सिनेमा समाप्त हो गया तो उसके बाद वह बाहर निकले। उन्होंने यह पाया कि उनकी गाड़ी में पेट्रोल नहीं था । इस-लिए गाड़ी चली नहीं । वह परेशान हुए इधर-उधर उन्होंने पता किया लेकिन पेट्रोल मिला नहीं । इसी बीच सिनेमा हाल बंद हो गया और लोग चले गए । थोड़ी देर बाद कुछ लड़के वहां आए । उन्होंने उस आदमी से पूछा आप किस लिये घम रहे हैं । उस आदमी ने बताया कि हमारी गाड़ी का पेट्रोल समाप्त हो गया । पेट्रोल चाहिए । उन्होंने कहा हम आपको पेट्रोल दे देते हैं । उन्होंने उस आदमी को पेट्रोल दे दिया । पेट्रोल लेने के बाद उन्होंने पैसे के लिए पूछा कि आपको कितना पैसा चाहिए तो लड़कों ने कहा इस पेट्रोल की कीमत पैसा नहीं है । आपके साथ दो महिलाए हैं उनमें से किसी एक महिला को हमारे साथ भेज दीजिए बाध्य होकर उस व्यक्ति ने अपनी लड़की जो कुवारी थी उसको साथ ले लिया और अपनी पत्नी को उनके पास छोड़ दिया । जो तीन दिन के बाद वह उनके पास लौट कर आई। इतने सम्भ्रांत घराने का वह आदमी है इसको आपके अधिकांश नेता जानते होंगे । उस व्यक्ति ने शर्म की वजह से इस घटना का कहीं उल्लेख नहीं किया । प्राइवेट रूप में वह बताते हैं ।

श्री बुद्ध प्रिय मौर्य (आंध्र प्रदेश): मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है । ठीक यह कहानी 1976 में इसी सदन में सुनाई गई । ठीक यही कहानी उस सदन में सुनाई गई । ठीक यही कहानी आज से एक-दो सप्ताह पहले श्री सत्यपाल मलिक जो इस सदन के सदस्य हैं उन्होंने सुनाई । यह वाक्या हुआ भी है या नहीं या सिर्फ यह अफवाहें फैलाई जा रही हैं? अगर हुई है तो उस व्यक्ति का नाम क्या है ? जिस महिला के साथ यह हुआ उसने कोई थाने में रिपोर्ट लिखवाई एफ०आई० आर० लिखवाई या नहीं ? हो सकता है शर्म की वजह से न लिखवाई हो । मैं जानना चाहता हूं कि यह किस तारीख का वाक्या है । ये बिल्कुल बेबुनियाद अफवाहें फैलाई जा रही हैं । यह 1976 में भी फलाई गई थी । इस सदन में भी दो बार फैलाई गइ सुनाई गई । (**व्यवधान**)

श्री हरी शंकर भाभड़ा : उपसभाध्यक्ष महोदय, हत्याएं होती हैं बार-बार होती हैं। इस तरह से घटनाएं एक नहीं 50 होंगी । इसका मतलब यह नहीं कि अफवाह फैलाई जा रही हैं।

(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. R. MORARKA): Order please. Mr. Bhabhra, your Special Mention has been admitted on a limited subject, namely, the alleged theft in the Digamber Jain Chhota Mandir, Kucha Seth, Delhi. Kindly confine your Special Mention to this subject.

SHRI HARI SHANKAR BHABHRA: I am coming to that. But I have been interrupted because of this point of order which has unnecessarily been raised. Actually, this point of order has got no force at all. The only thing is that, these people are unnecessarily provoking me. I am simply narrating how the law and order situation is getting worse in Delhi. This is the poster I have with me.

मैं वही पढ़ रहा हूं। उस पोस्टर में जो लिखा है मैं उसी को पढ़ कर सुनाना चाहता हूं। उसमें लिखा है —काली रात— चांदनी चौक में . . . (**व्यवधान**) ।

संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : उपसभाध्यक्ष महोदय, ये खुद ही पोस्टर बनाकर पढ़ रहे हैं . . . (**व्यवधान**)।

श्री हरी शंकर भाभड़ा : श्रीमन, मेरा स्पेशल मेंशन यही है . . . (व्यवधान) ।

श्री कल्पनाथ राय : उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे एक निवेदन करना है। मैं पार्लियामेन्टरी एफेयर्स मिनिस्टर हूं। आदरणीय आडवाणी जी जो भारतीय जनता पार्टी के जनरल सेक्रेटरी हैं वे उनको डायरेक्ट कर रहे हैं कि आप इसको । यह उचित बात नहीं है। ये लोग खुद ही पोस्टर छपवाकर खुद ही पढ़ सकते हैं किसी कहानी के लिए . . . . (**व्यवधान**) ।

SHRI LAL K. ADVANI: (Madhya Pradesh): On a personal explanation. I am really surprised. He is a Minister. Simply I am sitting by the side of my colleague and I have no idea whatsoever about it. I have asked him whether any of our colleagues has given a notice of special mention and he has said, yes. When I asked him what it was, he showed me the poster for the first time. Now, instead, the Minister makes a baseless allegation of this kind. My submission is simply this. The Chairman has allowed him to make a special mention on the basis of that poster itself. So, he has every right to refer to it.

श्री रामानन्द यादव (बिहार): श्रीमन्, मेरा पाइन्ट आफ आर्डर है और वह यह है कि स्पेशल मेंशन का सबजेक्ट मेटर किसी इशू पर होता है और माननीय सदस्य इस चीज को मेंशन करते हैं कि किस इशू पर स्पेशल मेंशन करेंगे। आपने भी कहा और मेरे पूर्ववक्ता ने भी कहा कि स्पेशल मेंशन क्या था। लेकिन माननीय सदस्य दूसरी चीज का जिक्र कर रहे थे और जिस जैन मंदिर में थेफ्ट के संबंध में स्पेशल मेंशन है उसका जिक्र न करके बाहरी चीज लाकर ला एण्ड आर्डर और दूसरी सारी चीजें कह रहे थे। यह नहीं होना चाहिए। मेरे ख्याल से स्पेशल मेंशन थोड़े पीरियड के लिए होता है, इसलिए हर आदमी को उसमें अपने आपको कंफाइन करना चाहिए। यही रूल्स में भी प्रोवाइडेड है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : उपसभाध्यक्ष महोदय जब आपने ध्यान दिलाया तो उसी समय मैंने उन से कहा कि जिस बात का आपने नोटिस दिया है, आप उसी की चर्चा करें . . . (**व्यवधान**)

श्री पी० एन० सुकुल (उत्तर प्रदेश): अभी जो कुछ हमारे भाभड़ा जी ने कहा, अगर वे यह सब एक पोस्टर के बेसिस पर कह रहे हैं तो कोई भी पोस्टर छापकर मामला उठा सकता है। जैसा अभी मौर्य जी ने कहा, आपको मामले की प्रोपर डिटेल देना चाहिए नाम देना चाहिए और जिस तारीख को वारदात हुई है उसकी तारीख देनी चाहिए, पुलिस स्टेशन का नाम देना चाहिए। खाली पोस्टर छापकर तो कोई भी ऐसा कर सकता है। यह इतना महत्व पूर्ण प्रश्न नहीं है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : श्रीमन, आपकी हिदायत के बाद मैंने उनसे तुरन्त कहा कि जिस बेसिस पर आपने स्पेशल मेंशन दिया है उसी को आप उठाइयें दूसरी घटना का जिक्र मत करिये।

श्री हरी शंकर भाभड़ा : उपसभाध्यक्ष महोदय आप लोग सब कह चुके हैं अब मेरी बात सुनिए। मैं पहले अपना स्पेशल मेंशन पढ़कर सुनाता हूं ताकि आपके दिमाग साफ हो जायें।

It is like this:

"Theft in Digambar Jain Chhota Mandir, Kucha Seth, Delhi, of precious jewel-studded idol and precious jewellery, silver, utensils, etc. and fast unto death by certain devotees; spreading discontent amongst sizeable section of Delhi population on the increasing law and order problem and the inaction by the authorities."

SHRIMATI MONIKA DAS (Karnataka): How can we mix up both the things? *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. R. MORARKA): Don't waste time of the House. Let him finish.

श्री हरी शंकर भाभड़ा : मैंने पहले एक घटना सुनाई। मेरा स्पेशल मशन जो चेयरमैन महोदय ने स्वीकार किया है उसी को दृष्टि में रखकर नीचे का हिस्सा मैंने पहले सदन के सामने रख दिया, लेकिन ऊपर का हिस्सा मैं अब सुना रहा हूं। इसमें आपत्ति की क्या चीज है? यह जो पोस्टर है, इस केस के सम्बन्ध में मामला दर्ज हुआ है। 29 और 30 नवम्बर की रात को दिगम्बर जैन छोटा मंदिर, कूचा सेठ में डकैती हुई जिसमें लाखों रुपये के जवाहरात, सोने चांदी के पात्र और मूर्तियां जो पुरानी थी चोरी हुई। उसका पुलिस में केस दर्ज हुआ, दिल्ली के अखबारों में वह केस रिपोर्ट हुआ और पुलिस ने उनको गिरफ्तार करने के लिये कुछ ईनाम की भी घोषणा की है। लेकिन इसके बावजूद आज तक इस डकैती का पता लगा नहीं। परिणाम यह हुआ कि सारे चांदनी चौक इलाके में ये पोस्टर वहां की जनता ने लगाये हैं। आप मेरी अनुपस्थिति में जाकर देख लीजिए। . . . (**व्यवधान**) अब मैं इस पोस्टर को पढ़कर सुनाना चाहता हूं जिसका मैंने कारण दिया है कि वहां की जनता में अशांति है। इसका हैडिंग है—काली रात।

दिनांक 29 नवम्बर एवं 20 नवम्बर की मध्य रात्रि में अराजक एवं असामाजिक तत्वों ने भगवान के पूजा स्थल श्री दिगम्बर जैन छोटा मंदिर जी, कूचा सेठ में डकैती डालकर परम पूज्य मूर्तियों रत्न जड़ित जेवरों एवं चांदी के पात्रों को लूट लिया। इस गंभीर अपराध से देश में सभी धर्मों के अनुयायियों की भावना को गहरी ठेस लगी है।

अत: केंद्रीय सरकार एवं दिल्ली प्रशासन से राजधानी के जैन समाज का यह अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में समुचित कार्रवाई की जाए और अपराधियों को पकड़ कर पवित्र मूर्तियों एवं अन्य सामग्री को श्री मन्दिर जी में पुन:

स्थापित किया जाए। इसके निवेदक हैं जैन समाज, दिल्ली।

मान्यवर, इसमें कुछ लोगों ने अन्न खाना छोड़ दिया है और आज वे मुझसे मिले थे तो उन्होंने बताया है कि जब तक इन मूर्तियों का पता नहीं लगेगा तब तक वे अन्न नहीं खायेंगे। इसलिए पुलिस को ज्यादा सक्रिय होकर इस घटना, इस डकैती का पता लगाना चाहिए और उन लोगों को बचाया जाना चाहिए जिन्होंने खाना छोड़ दिया है। (इति)

श्री लाडली मोहन निगम (मध्य प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, ये लोग घर मंत्री के दरवाजे पर बैठे हुये हैं इसलिये कि घर मंत्री खुद बेचारे दिगम्बर हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. R. MORARKA): Kindly sit down.

I. Statutory Resolution seeking disapproval of the Textile Undertakings (Taking over of Management) Ordinance, 1983.

II. The Textile Undertakings (Taking over of Management) Bill, 1983.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. R. MORARKA): The House will now take up the Statutory Resolution seeking disapproval of the Textile Undertakings (Taking over of Management) Ordinance, 1983 and the Textile Undertakings (Taking over of Management) Bill, 1983. Shri Pyarelal Khandelwal.

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल (मध्य प्रदेश) : श्रीमन, मैं प्रस्ताव करता हूं कि :

"यह सभा राष्ट्रपति द्वारा 18 अक्तूबर, 1983 को प्रख्यापित कपड़ा उपक्रम (प्रबन्ध ग्रहण) अध्यादेश, 1983 (1983 का सं० 10) का निरनुमोदन करती है।"

उपसभापति जी, मैं मंत्री जी द्वारा बम्बई की 13 कपड़ा मिलों को अध्यादेश के माध्यम से लेने वाले बिल का विरोध करता हूं।

श्रीमन्, सरकार की यह नीति बनती जा रही है कि वह अध्यादेशों के द्वारा अपना सारा काम चलाती है। जहां तक बम्बई की कपड़ा मिलों का सवाल है, यह कोई तुरन्त घटने वाली घटना नहीं थी, बम्बई की कपड़ा मिलों में हड़ताल और वहां की मिलों के बन्द होने की बात 20–21 महीने से चल रही थी। लेकिन सरकार ने 20–21 महीने तक इस सारे मामले पर कार्यवाही नहीं की, सरकार आंख मूदकर बैठी रही। सरकार को इन कपड़ा मिलों का अधिग्रहण करने की याद तब आई जब बम्बई में ए० आई० सी० सी० का अधिवेशन होने वाला था और उनको जब यह लगा कि कांग्रेस के अधिवेशन में वहां के मजदूर प्रधान मंत्री को बम्बई में घुसने नहीं देंगे। उस समय उनको इसकी याद आई कि इनके लिये कार्यवाही की जाए।

श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव (महाराष्ट्र) : स्ट्राइक के पीरियड में भी श्रीमती गांधी बम्बई गई थीं। ... **(व्यवधान)**

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल : श्रीमन, मैं कहना चाहता हूं कि इन 13 कपड़ा मिलों का अधिग्रहण राजनीतिक उद्देश्य से किया गया है, यह मेरा आरोप है। इसके कारण हैं। बम्बई की मिलों की स्थिति खराब नहीं थी, केवल बम्बई की ही मिलें बन्द नहीं थीं। हिन्दुस्तान